स्वर्ग को पाकर क्या होगा

स्वर्ग को पाकर क्या होगा,
गर तुमको न मैं पाऊँगी।

स्वर्ग में तुमसे दूर रही,
पुनः मृत्यु लोक ही पाऊँगी।।

इससों दुःख ही बहु भला,
तुमको तो भुला नहीं पाऊँगी।

दुःख सों तड़प तड़प के राम,
हर आह में तुझे बुलाऊँगी।।

झोली भर दे दुःखों से,
गर संग में राम मिले।

स्वर्ग की अब चाहना नहीं,
गर वहाँ न राम मिले।।

यह धन ले ले, मान भी ले ले,
इनके गये गर आन मिले।

पुनः पुनः मुझे मृत्यु दे,
गर मृत्यु से मुझे राम मिले।।

- परम पूज्य माँ

(9.1.1960)

प्रार्थना शास्त्र नं. - 1/272

अनुक्रमणिका

३. *'..गर प्रेम की नैया डूब गई, प्रेम सागर में डूबेगी!'*
प्रस्तुति - डॉ. जे. के. महता (पापा जी)

७. *'..मैं भिखारी तू दरियादिल, मैं तलबगार तू मेरा मन्दिर'*
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

११. *क्या भूलूँ.. क्या याद करूँ..*
श्रीमती पम्मी महता

१५. *'श्रुति ताड़ना देती है, राज़ यहाँ पर समझ ले!'*
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२०. *चहुँ ओर आपके प्यार की महक..*
(श्रद्धांजलि)

२२. *बुद्धि त्याग से अभिप्राय*
अर्पणा प्रकाशन 'ज्ञान विज्ञान विवेक' में से

२७. *'यह बुत तो तुम हो ही नहीं..'*
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन

३२. *"..अहंकार से उठाकर के, मुझे परम चरण में धर देना!"*
श्रीमती पम्मी महता

३६. *अर्पणा समाचार पत्र*

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन,
करनाल १३२ ०३७, हरियाणा.

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा मार्च २०१९ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

'..गर प्रेम की नैया डूब गई, प्रेम सागर में डूबेगी!'

प्रस्तुति - डॉ. जे. के. महता (पापा जी)

परम पूज्य माँ के साथ पापा जी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सत्या महता एवं अर्पणा के अन्य सदस्य

(डॉ. जे. के. महता द्वारा प्रस्तुत यह लेख 'अर्पणा पुष्पांजलि' के मार्च १९९७ के अंक में से पुन: प्रस्तुत किया जा रहा है)

पापा जी - प्रतिकूलता में तो भगवान की याद आती है और चित्त भी चरण में टिकता है, परन्तु अनुकूलता में मन भरमा जाता है, पूर्व स्मृतियों की जागृति और संकल्प-विकल्प मन में भगवान की याद उठने ही नहीं देते। इसके लिए क्या किया जाये?

पूज्य माँ - प्रतिकूलता में भय होता है और हम भगवान की शरण ढूँढते हैं। वहाँ पर हमें आश्रय मिलता है और अनुकूलता मिल जाती है। तब बाहर का कोई वाक् या परिस्थिति का प्रहार हम पर असर नहीं करता, हम सुरक्षित हो जाते हैं.. यह भगवान की कृपा है!

यदि मनोस्तर पर यहीं संग हो गया और इस अनुकूलता से रति हो गई तो भगवान से दूरी हो जाती है और दुष्टता बढ़ने लगती है। भगवान तो जो देते हैं, वह वापिस नहीं लेते.. इसलिये इस दुष्टता का फल तो शायद अगले जन्म में मिले.. यदि दुष्टता बहुत बढ़ जाये तो कई बार इसी जन्म में ही इसका परिणाम मिल जाता है।

जग में करोड़ों दर करोड़ों लोग आते हैं और चले जाते हैं, परन्तु श्रेष्ठ वह कहलाते हैं, जो प्रतिकूलता-अनुकूलता में कहीं संग नहीं करते और दोनों में समभाव से रहते हैं। उन पर चाहे कोई कितने भी प्रहार करे.. परिस्थिति चाहे जितनी भी विपरीत हो.. उनका मन उससे प्रभावित नहीं होता। वहाँ मन ही नहीं है, तो फिर सुखी-दुःखी कौन होगा?

देखने वालों को कई बार लगता है कि उनको बहुत कष्टों का सामना करना पड़ रहा है। जिसे सँसार सुख समझता है, वह तो उन्होंने कभी देखा ही नहीं। परन्तु फिर भी वह सदा सुखी हैं। 'वास्तव में सुख तो केवल नाम में है!' इसलिये यह न भूल जायें कि जहाँ नाम नहीं रहता, वहाँ सुख ख़त्म हो जाता है।

प्रतिकूलता में साधक को नाम के प्रताप का अनुभव होता है। जब बाहर किसी ने तड़पा देने वाला तीर मारा, परन्तु अन्दर.. उसके आन्तर्मन में उसका सुख विचलित नहीं हुआ.. साधक को तब ऐसा लगा कि यह बाह्य रूप तो भगवान ने मेरे लिये रचा है, ताकि मैं समत्व सीख पाऊँ!

..अनेकों बार उसे प्रतिकूलता में भी सुख का अनुभव मिलता है।

..और कई बार प्रतिकूलता पर हँसी भी आ जाती है,

परन्तु यदि वह इस सुख में रमण करने लग गया तो यह सुख से रति होगी!

या इसको यूँ समझें.. विपरीतता आई, धन चोर ले गये या कई बार ऐसा हुआ कि सर्वस्व लुट गया.. पर साधक को लगता है राम ही चोर बनकर आ गये। इसलिये उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। वह आन्तर में ख़ुश रहता है। या फिर किसी ने मन को विदीर्ण करने वाले वाक् कहे, परन्तु साधक के गिर्द तो राम-रेखा लगी हुई है!

पहले वह ऐसी बात सुनकर दुःखी हो जाता था, परन्तु अब नाम के कवच पर वाक् रूपी वाणों का असर ही नहीं होता। नाम ने जैसे कटु वाक् के बाण को ही काट दिया! जितना जितना साधक रामरचित रेखा को स्वीकार करने लगा, उतना उतना उसे आन्तर में सुख मिलने लगा। जितना जितना वह बाहर बिन कुछ अपनाये, नाम के आधार पर बैठा रहा और यह मानता रहा कि 'सब राम ही करते हैं', वह उत्तरोत्तर आगे बढ़ता जायेगा और उसे इस भाव में अटूट सुख मिलने लगेगा!

..सच तो यह है कि केवल सुखी ही भजन कर सकता है और नाम ले सकता है! दुःखी तो नाम के आसरे रेखा की स्वीकृति तक ही जा सकता है। यहाँ तक तो साधना आसान है।

साधक नाम के आधार पर स्वर्ग को पा लेता है। परन्तु यदि उसे वह वातावरण न मिला जो उसको इससे आगे ले जाता, तो कई लोग स्वर्ग से लौट कर आ जाते हैं। सुख

का आकर्षण बहुत तीव्र है। यदि सुख ने चहुँ ओर से घेर लिया और हम वहीं भरमा गये, तो पतन हो जायेगा। जो सुख में भी अविचलित रहा, वह ही आगे जा सकता है!

कठोपनिषद् में नचिकेत ने यमराज को यही कहा कि यदि सब उपभोग भी मिल जायें.. स्वर्ग भी मिल जाये.. परन्तु इससे वह मृत्यु से तो नहीं तर पायेगा। उसमें सत् के प्रति तीव्र लग्न और जिज्ञासा थी। स्वर्ग-लोक में पहुँच कर उसने कहा मुझे यह सुख नहीं चाहिये। साधक यही कहता है कि मुझे स्वर्ग-लोक नहीं चाहिये। साधक का भाव यही होता है। फिर उर्वशी* ने भी यही कहा, 'तुमसों कम अब मैं न लूँगी।'

फिर यह भी कहा -

'..मेरा कर पकड़ो और संग चलो,
नहीं लौट के मैं नहीं आऊँगी।
विधिवत् ध्यान की बात कहो,
तेरा ध्यान कभी न लगाऊँगी।।

इस पल तो तू सामने है,
तू रूठ गया और लौट गया,
तब क्या राम मैं पाऊँगी।।'

..भूल इसलिये हो जाती है क्योंकि आपने कभी अपनी ओर नहीं देखा। जब अपने आन्तर के दर्शन हो जायेंगे, तभी आप इस ओर चलने के प्रयत्न करेंगे। तब आप जो भी करेंगे.. भगवान की बात मान कर करेंगे। तब ही इस भाव में आयेंगे कि 'हे राम! कर्त्ता तू, भोक्ता तू, परिस्थिति तू, हर वाक् तू!

हे राम! हर मनोसुख तेरी देन है, यह मनोकर्म मेरा नहीं.. ऐसा अभ्यास करते करते एक दिन ऐसा आयेगा कि आप पुकार उठेंगे -

'..यह मनोभावना कैसे कहूँ,
मैंने आप ही बदल दी।
यह करनी तो तेरी है,
मैंने आँख खोल के देख ली।।

कैसे अपनाऊँ यह मन,
कैसे कहूँ यह मेरा है।
इस मन का इक कण भी,
जानूँ राम नहीं मेरा है।।'

यदि आज आप अपने आन्तर में देखें तो आपको पता लगेगा कि जो आपका आधुनिक मन है, उसका तो पहले एक कण भी नहीं था। आज आपकी वह नींव बनी है..

---

* परम पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित स्वतः स्फुरित ज्ञान प्रवाह को 'उर्वशी' कहकर पुकारते हैं

जिसमें आपका सुख स्थायी हो गया है। जब चित्त शुद्ध हुआ तो स्वर्ग में क़दम धरा, अब कहते हैं इससे आगे चलो! अब देखो यह किसकी देन है, जो यहाँ मनोवृत्तियों का अभाव हुआ दीखता है.. अब आपके लिये आगे जाना सरल है।

जब हम चण्डीगढ़ में ही थे, एक बार यह अपना मन बेगाना सा लगने लगा। ऐसा लगा कि जिस मन के साथ मैं इतनी देर रही, वह मन कोई और ही था। अकस्मात् ऐसा लगा कि यह मन दीवाना हो गया.. इसे राम से प्रेम हो गया.. तो उस विवेक का धन्यवाद किया जिसके कारण यह सुख मिला!

पापा जी - यदि साधक यह कहने लगे कि सब राम ही करते हैं तो उसमें वह पलायनता को भी तो प्राप्त हो सकता है?

पूज्य माँ - यह बात तो केवल शुद्ध मन ही कह सकता है, अशुद्ध चित्त नहीं! शुद्ध चित्त वाले पलायनता को प्राप्त नहीं हो सकते। रेखा बँधे सबके कर्म फ़र्क़ हो सकते हैं.. पर भावना, आधार सबका एक होता है।

जैसे जगद्गुरु शंकराचार्य उत्तर भारत से दक्षिण भारत, कश्मीर से कन्याकुमारी तक ज्ञान का प्रचार करते हुए घूमे। उनके पास ज्ञान की कोई कमी नहीं थी। दक्षिण में मण्डन मिश्र के साथ उनका शास्त्रार्थ होने लगा, तो मण्डन मिश्र को हारते हुए देख कर उनकी विदुषी पत्नी ने उनकी ओर से शंकराचार्य जी से विवाहित जीवन के सम्बन्ध में प्रश्न किया। शंकराचार्य जी इसके बारे में बिलकुल अनभिज्ञ थे। उन्होंने कहा, 'मैं हार नहीं सकता, क्योंकि इससे मेरे जीवन का प्रयोजन अधूरा रह जायेगा! मुझे इसकी तैयारी के लिये समय चाहिये।' इस पर उन्होंने अपना शरीर त्याग कर एक राजा के मृतक शरीर में प्रवेश किया और वहाँ रहकर सारा अनुभव प्राप्त किया। तत्पश्चात् अपने शरीर में वापिस आकर उन्होंने मण्डन मिश्र को शास्त्रार्थ में हराया और वह शंकराचार्य जी के शिष्य बन गये। इसके विपरीत रमण महर्षि किसी से भी वाद-विवाद में नहीं पड़ते थे। उनसे कोई कुछ भी पूछता तो वह कहते थे कि पहले अपने आपको जान लो।

रेखा सबकी अपनी अपनी होती है, उसे नहीं बदला जा सकता। साधक चित्त की शुद्धि चाहता है। वह अपने मन को विवेक के साथ रोकता है और यह देखता है कि मेरा मन कहाँ पहुँचा।

मन को श्रेष्ठता पसन्द है। जब मन सुखी हो जाता है, वह सूक्ष्म लोक में आता है और वहाँ वह यह मानने लगता है कि मन मेरा नहीं, 'मैं' मन नहीं। इसके पश्चात् ही साधक आगे जा सकता है।

(६ मार्च १९६६ के सत्संग पर आधारित)

❖ ❖ ❖

'..मैं भिखारी तू दरियादिल,
मैं तलबगार तू मेरा मन्दिर'

अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

गतांक से आगे ~

पौड़ी ३८

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु।
अहरणि मति वेदु हथीआरु।
भउ खला अगनि तप ताउ।
भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि।
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल।
जिन कउ नदरि करमु तिन कार।
नानक नदरी नदरि निहाल।।३८।।

शब्दार्थ : (संयम) यत की भट्ठी, धीरज का सुनारा, बुद्धि का अहरन (वह पत्थर जिस पर रखकर सोने पर चोट लगाई जाती है), ज्ञान का हथौड़ा, ईश्वर भय (के ध्यान) की धौंकनी और तपों का तौणा (की तपाई हुई) अग्नि हो, तो प्रेम की कुठाली में नाम अमृत को डालकर सच्ची टकसाल का

(ज्ञान रूप) शब्द घड़ते हैं। जिन पर उस दाता की कृपा दृष्टि हो, यह उनका काम है। हे नानक! प्रभु की कृपा दृष्टि से ऐसे भक्त निहाल हो जाते हैं।

पूज्य माँ :

पावनता भये अग्न कुण्ड, धैर्य सुनार बन जाये।
बुद्धि पावनता रूप धरे, वेद औज़ार बन जाये।।१।।

प्रभु ध्यान भये धौंकनी, तप की अग्न तब जल जाये।
प्रेम के कासे में तब ही, अमृत का जाम भी पड़ जाये।।२।।

साँचो टकसाल में शब्द घड़े, निहित राज़ तब खुल जायें।
जिन पर कृपा हो प्रभु की, वही तो ऐसा कर पायें।।३।।

वा की कृपा मन माँगिये, अमर आनन्द तब पाये।
महागुरु नानक देख कहें, मिले नज़र आनन्द ही हो जाये।।४।।

ओ करुणापूर्ण दयानिधि, मन तो नज़र तेरी चाहे।
कोई विधि कुछ तो करो, कुछ कृपा यहाँ हो जाये।।५।।

मैं पात्र नहीं मैं जाने हूँ, कोई ज्ञान भी मुझको न आये।
अशरण के शरणा देख सही, हम शरणापन्न होने आये।।६।।

हे नानक तूने सत्य कहा, बिन नज़र के कछु न हो पाये।
ओ दयालु आक़ा मालिका, कुछ रहम मुझपे भी हो जाये।।७।।

कहाँ से ज्ञान यह ध्यान मिले, यह धैर्य कहाँ से अब आये।
पावनता भये अग्न कुण्ड, यह कैसे अब हो पाये।।८।।

पाप विमोचक मल विमोचक, रहनुमा तोरे दर आये।
कैसे पतित उद्धार यह हो, याचक तेरे दर आये।।९।।

पावन कर दो मालिक मेरे, पावनकर्ता तेरे दर आये।
परवरदिगार तू ग़रीब परवर, ग़रीबनवाज़ तेरे दर आये।।१०।।

ध्यान लगे हर पल मेरा, ध्यान धौंकनी बन जाये।
गर यह ध्यान मेरा लगा रहे, तप की अग्न भी जल जाये।।११।।

पर ध्यान कैसे लग पाये, गर नज़र तेरी न हो जाये।
बस इतनी रहमत कर दे, मेरी आग और भड़क जाये।।१२।।

हर पल मन जले अग्न में, यह 'हउमैं' भी मेरी बल जाये।
गर तेरे हुक्म में नित्य रहूँ, तब ही तो यह हो पाये।।१३।।

मैं भिखारी तू दरियादिल,
मैं तलबगार तू मेरा मन्दिर।।

मैं दुःखपूर्ण मलपूर्ण, बेताब बेअदब तू रहनुमा।
तेरे चरण में आके तुझे कहें, केवल तू है मेहरबां।।१४।।

मेरी अहं भी कृपा नहीं करे, मेरा मन भी कृपा नहीं करे।
यह चाह भी कृपा नहीं करे, मेरा संग भी कृपा यह नहीं करे।।१५।।

यह 'मैं' ही कृपा नहीं करे, फिर भी तेरे दर पे पड़े।
मालिक मौला भगवन् मेरे, अज तेरे ही हम चरण पड़े।।१६।।

तेरे जलवे का दीदार हो, यह नहीं हम माँग रहे।
ज्ञान का प्रवाह हो, यह भी नहीं हम माँग रहे।।१७।।

हुक्म अदूली नहीं करें, इतना ही अज माँग रहे।
चरण की धूलि बन के रहें, बस इतनी ही ताँग रहे।।१८।।

तेरी याद नित बनी रहे, चरण में इतना माँग रहे।
कासा भी हो प्रेम का, तब अमृत का जाम भरे।
मेरा दर्द ही कासा नानका, इसमें तेरा नाम भरे।।१९।।

सच की कहाँ टकसाल लगे, जहाँ शब्द तेरा कुछ समझ पड़े।
यहाँ समझ समझ के समझ थके, कुछ भी नहीं मुझे समझ पड़े।।२०।।

पर तूने कहा मेरे मालिका, तेरी नज़र से ही तेरा नाम मिले।
रहमत का भिखारी दिले बेक़रार, लेके तेरे चरण पड़े।।२१।।

मुदित मनी मैं हो जाऊँ, मेरे मालिक यह भी न माँगूँ।
मैं तो केवल तेरी हो जाऊँ, इस पल तो इतना ही माँगूँ।।२२।।

इतना सा मुझे नाम दे, मैं चरणन् में ही सो जाऊँ।
मेरा नामोनिशां भूले मुझको, बस जाम पीऊँ और सो जाऊँ।।२३।।

कृपा तो माँगूँ इतनी सी, मेरा चैना सारा बीन लो।
दया तो माँगूँ इतनी सी, अपने से दूरी छीन लो।।२४।।

रहम तो माँगूँ इतना सा, मेरी दर्द थोड़ी भड़का ही दो।
नज़र तो माँगूँ इतनी सी, अपने कारण तड़पा ही दो।।२५।।

मेहर तेरी इतनी माँगूँ, मेरे मन में आग लगा ही दो।
तरस करो मुझपे मालिक, अपने पास बुला ही लो।।२६।।

मैं और कछु न माँगूँ मालिक, चाकर अपना बना ही लो।
मेरा नामोनिशान मिटा करके, वहाँ अपना नाम सजा ही दो।।२७।।

सजदे करूँ मैं बार बार, पुकारूँ तुझको बार बार।
जो कहो कहूँ बार बार, कर लो मेरा एतबार।।२८।।

मैं तेरे चरण मैं आ बैठूँ, यह रोम रोम मैं चढ़ा ही दूँ।
हर रक्त की बून्द जो बाक़ी है, तेरे नाम से उसे सजा ही दूँ।।२९।।

इतना माँगूँ मालिका, मेरे नानक इतना माँगे हूँ।
तू दीनाबन्धु तू दीनानाथ, मैं दीन अर्ज़ राह माँगे हूँ।।३०।।

आनन्द मिले तेरे नाम में, मैं आनन्द नहीं अज माँगे हूँ।
चैन मिले तेरे नाम से, मैं चैन नहीं अज माँगे हूँ।।३१।।

ओ नानक मेरे बादशाह, मैं तुमसे तुमको माँगे हूँ।
मेरा सब कुछ तू ले ले, मुझे नाम दे ये माँगे हूँ।।३२।।

ज्ञान की बातें बहुत सुनीं, श्रवण करी के माँगे हूँ।
बिन गुण कर्म तू नहीं मिले, तो करम कर मैं माँगे हूँ।।३३।।

मैंने कर्म कबहूँ किये नहीं, मैंने दान कोई दिये नहीं।
नाम भी मैंने लिये नहीं, सत्य में भाव यह भरे नहीं।।३४।।

तेरी रहमत की चर्चा सुनी आई, तू मेहरबान मैं जाने हूँ।
तू एक गुरु अखण्ड है आप, तू ब्रह्म स्वरूप है जाने हूँ।।३५।।

तेरा हुक्म चले मेरे मालिका, तू सब है आप मैं माने हूँ।
तेरी मेहर तेरा नाम मिले, यह सत्यता मैं जाने हूँ।।३६।।

❖ ❖ ❖

क्या भूलूँ.. क्या याद करूँ..

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ को तिलक लगाते श्रीमती पम्मी महता

परम वन्दनीय व परम पूज्य श्री हरि माँ, आपको मेरा कोटि कोटि प्रणाम!

हे श्री हरि नाथ, 'अरुणाचल'* की इस पावन धरती पर आप ही से प्रेरित हो करी जीवन जीती आई हूँ..

इसी धरती पर पूज्य बाबा सर (पापा जी) को उनकी आपके प्रति प्रीत व सच्ची लग्न ने जीवन का अमृत-पान करवाया। आप परम पूज्य माँ को अपनी मनोधरा पर उतरने के लिए किस क़दर अनुनय-विनय करी.. व अपने हृदय के उद्‌गारों को उकेर-उकेर कर बुलाते ही चले गये, इस परम सत्य के हम सभी साक्षी हैं। इस धरती व हर मनोधरा पर जिसे आपने अपने क़दमों से नवाज़ा हुआ है.. जो भी आप के पास आया या आपने बुलाया, उसे आशीर्वाद ही नहीं दिया बल्कि उस जीवन की गति को सद्‌गति बना अपने जीवन प्रवाह में ही प्रवाहित करना शुरु कर लिया।

'अरुणाचल'* - जालंधर में पूज्य पापा जी के निवास स्थान का नाम है.. जहाँ वर्तमान में श्रीमती पम्मी महता रहती हैं।

..आ, देख ले, जीने की अदा देख ले! इन्हीं क़दमों के पीछे-पीछे चलता चला आ.. जो तू भी जीने के अंदाज से भरपूर हो जायेगा। श्रद्धा-भक्ति व प्रेम का जीवन में अनुपम प्रसाद पा कर, इस अपने आंतर की सारी कालिमा को बहा कर सत् पथिक बन जायेगा.. और श्री हरि परम पूज्य माँ के श्री चरणन् में विश्राम पा लेगा!

आप माँ की वाणी का परम सत्य यूँ ही जीवन बहाव बनता चला जाता है, क्योंकि आप कृपालु दयालु नाथ ही तो अपने से हम जीवों को सनाथ कर रहे हैं। यह कोई कल्पना नहीं.. जीवन की हक़ीक़त है.. जिसे सभी के हृदयों में उकेर रहे हैं। कैसा विलक्षण सत्य है जो हमारे जीवनों को इतना अद्‌भुत व भव्य प्रसाद देकर हमारे आंतर की कालिमा को आप निरन्तर धोये चले जा रहे हैं!

अद्‌भुत! धन्य हैं आप श्री हरि माँ! धन्य है आप की अपरम्पार महिमा, जिसका सामगान सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है.. पता नहीं माँ, कलिकाल की व्याप्कता की इस ओढ़नी को कब इस आंतर बाहर से हटा कर आपकी रोशनाई में जीना है!

वक्त आ गया है, जब आंतर बाहर की इस दरिद्रता का अंत होगा और सत्य का प्रकाश होगा। अँधेरे उजालों में परिणत हो जायेंगे। भगवान से यही विनीत प्रार्थना है, 'यारब! इस कलिकाल का अब अंत कर दीजिये! सारी सृष्टि विनाश के कगार पर खड़ी है..' आमीन

आप श्री हरि माँ ने जो मेरे हृदय में अपने क़दम लिये हैं, हर पल.. हर दिन.. उसी पावनता से लौटा लीजियेगा, जो आप ही को यह हृदय अतीव कृतज्ञता से धारण कर पाये सदा-सदा के लिये! आप प्रभु श्री हरि माँ का असीम अनुग्रह युगों-युगों तक इसे प्राप्त रहे! हरि ओइम् तत्सत्!

धन्यवाद! माँ, कोटि-कोटि धन्यवाद! आप ही की अतीव कृपा से आप ही को जीवन में धारण करने का अवसर पा जाऊँगी व यह चित्त आप ही के श्री हरि चरणन् में टिका रहे सदा-सदा के लिए! आमीन. आप श्री हरि माँ का ही नाम बोले मेरे जीवन से.. मेरे अंग-अंग से.. आप ही आप व्यक्त होयें इस हृदय से! यही असीस मुझे दिये रहें, क्योंकि व्यक्त-अव्यक्त आप ही हैं। हे श्री हरि नाथ, तभी तो यह हृदय आप ही निजी ज़िन्दगी की कठोरता छोड़, आप से प्रेम की नमी पा जाता है।

जीवन में कोई गिला, कोई शिकवा व शिकायत नहीं रहे। बस यही सन्देश रहे, तुझे चलते ही चले जाना है हर हाल में, अछूता ही.. तुझे निकलते चले जाना है! यह जानते हुये व मानते हुये कि जो हो रहा है आप ही की रज़ा में हो रहा है.. इसलिए इसी में रज़ामंद रहते हुये निरन्तर चलती ही चलूँ। आप श्री हरि माँ का दिव्य व विलक्षण प्रेम मेरे जीवन के हर पल को इतना हलका कर देता है कि साफ नज़री आता है कि आप श्री हरि माँ ने ही मेरा सारा भार अपने ऊपर ले लिया है! असीम श्रद्धा, भक्ति व प्रेम का प्रसाद देई आप अपने ही रंग में रंग कर इसे लिए ही चले जा रहे हैं।

हे माँ आप मुझे चहुँ ओर नज़री आते ही चले जाते हैं और यह आपकी कनीज़ धन्य धन्य ही महसूस करती जाती है। हमारी बंजर भूमि को अपने प्यार की नमी देकर कैसे सराबोर कर लेते हैं.. सारे कष्ट क्लेश, जो 'मैं' जनित हैं उनसों निजात दिलाने के लिए कैसे भवसागर से पार ले जाते हैं व अपने विलक्षण व अद्‌भुत नाम रूपी महामंत्र से नवाज़े ही लिए जाते हैं। फिर पता चलता है -

'जग ने दुःख मुझे नहीं दिया, क्यों झूठ बताऊँ मैं।
मैं अपने कारणा दुःखी हुआ, क्यों मान न जाऊँ मैं।।'

यह परम सत्य जब आपने जनवा दिया और जीवन की हक़ीक़त से परिचय करवा दिया.. तो सच ही माँ, जीवन जीने का अंदाज़ ही बदल गया! धन्य हैं आप! आपकी महिमा का सामगान हृदय में गूँजता है तो मनोधरा रूपी मयूर नाचने लगता है..

इश्क़ की सौग़ात ही इतनी अद्‌भुत व सुन्दर तथा भव्य होती है। तब ही पता चलता है, कहाँ से कहाँ आ गये हम.. आप श्री हरि परम पूज्य माँ ने हमें सही राह नहीं दी होती, तो हम भकटते ही रह जाते!

जन-जन में व्याप्त आक्रोश, स्वार्थ व व्यभिचारी वृत्तियों से छुटकारा दिला, हमें हमीं से व हमारी वास्तविकता से आप मिलाने आते हैं! हक़ीक़त में हम क्या हैं, इसी की याद दिलाने आते हैं। हम कब कैसे हक़ीक़त से दूर होकर कितने आँसू बहाते हैं.. आप ही करुण-कृपा करी हमें हमारी 'मैं' की तंद्रा से छुटकारा दिलाने आते हैं।

हे मानस की जात, अपनी परम सत्यता को छोड़ ख़ुद को कितना दुःखी कर लिया.. तभी कृपा करी आप धरा पर अवतरित हो कर हमें नवाज़ने आ गये! धन्य हैं आप हे हरि माँ, आप ही की कृपा से हमें हमारा परिचय मिल गया। अपने आप से ही हम पराये ही थे.. हमारा अस्तित्व क्या था और कहाँ भटक कर चले गये.. हे श्री हरि नाथ हम अपना आभार व्यक्त नहीं कर पा रहे, जो आपने आ हमें सम्भाल लिया!

क्या सच ही आप श्री हरि माँ ने कृपा करी हमारे आंतर में दस्तक दे दी है.. 'चले आओ! हम आपको सत्युग में ले चलेंगे!' कितना अनुराग है आपका जीव जगत के लिए! आपकी रहमतें तो बेइंतहा है, बस हे मानस की जात दामन पसार कर हृदय में इस मिली प्रभु माँ की हर अमानत को जी जान से स्वीकार कर अपने क़दमों को उन्हीं से पाई रहगुज़र पर उनके पाछे-पाछे चलते चलें!

कोई संशय न उठने दें मन में, क्योंकि श्री हरि माँ ने हमें थाम लिया है और आश्वासन देई करी हमें चलने को प्रेरित किया है। आइये, हम सभी उन्हीं की शरण में, उन्हीं की आज्ञा के अधीन हो करी सभी चलते ही चलें उन्हीं के चले क़दमों के पाछे-पाछे!! तभी तो हम गुमराह नहीं होंगे! दृढ़ निश्चय से चलते ही चले जाना है हमें.. जो आप हमें पीछे छुड़वा रहे हैं उसको पलट के नहीं देखना.. बस चलते ही चले जाना है!

इस आस्था से कि हमें श्री हरि माँ प्रभु जी स्वयं लिवाये लिए जा रहे हैं.. हमारे सबके आंतर में उन्हीं के क़दमों को सजीव होना है! इसी निश्चय से क़दम-ब-क़दम बढ़ाये जाना है हम सभी को। यही श्रद्धा-सुमन असीम प्रेम से हमें उन्हीं श्री हरि माँ के श्री चरणन् में चढ़ाने हैं! आप माँ का हर वाक् ब्रह्म वाक् है, इसी लिए उसे अंगीकार करना है। परम पूज्य माँ के वाक् को गिरने न दें! यही तो आप श्री हरि माँ का कृपा प्रसाद है।

क्या भूलूँ.. क्या याद करूँ.. जब सब आप ही आप का कृपा प्रसाद है। इसे नित नव नूतन भाव व उसी तथ्य पर वारी वारी जाती हूँ क्योंकि आप ही के अनुराग के पराग से भरा है मेरा जीवन.. जिसका न आदि है, न अंत! आप अनादि का ही विस्तार बसा है!

सद्भाव, सद् इच्छा, सद् समर्पण ही आप श्री हरि के श्री चरणन् पर बना रहे सदा सदा के लिए! अब आप ही बताइये जीवन में इसके सिवा और क्या चाहिए आपकी इस कनीज़ को.?!! ईश्वर करे सदा आप ही की चाकरी में रहूँ व जो आपने इसे आशीर्वाद दिये हुये हैं उन्हीं का मान रहे इस हृदय में.. जो कभी भी इस देन का वियोग न हो, यही विनीत व करबद्ध प्रार्थना है आपसे मेरी!

आप श्री हरि परम पूज्य माँ ने ही अपना परिचय इस अपनी कनीज़ को दिया। इस हृदय-आँचल में आप ही ने अपने को भरा हुआ है.. आपकी मेहर, आपकी करुण-कृपा सदा बनी रहे! आपका वर्द्धहस्त बना रहे मुझपे!

आपकी पम्मी

'श्रुति ताड़ना देती है,
राज़ यहाँ पर समझ ले!'

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयंधीराः पण्डितं मन्यमानाः।
जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - द्वितीय खण्ड, ८ श्लोक

शब्दार्थः

अविद्या के भीतर स्थित होकर भी अपने आप बुद्धिमान बनने वाले और अपने को विद्वान मानने वाले वे मूर्ख लोग बार बार आघात (कष्ट) सहन करते हुए; ठीक वैसे ही भटकते रहते हैं; जैसे अन्धे के द्वारा ही चलाये जाने वाले अन्धे अपने लक्ष्य तक न पहुँच कर, बीच में ही इधर-उधर भटकते और कष्ट भोगते रहते हैं।

तत्व विस्तारः

अविवेकी अज्ञान रति, ज्ञानी निज को माने हैं।
मिथ्यात्व में पड़े कहें, ज्ञातव्य को जाने हैं।।१।।

धीर वीर निज को कहें, सत्त्व सार न जाने हैं।
भ्रम जाल में बँधे हुये, भ्रम को न पहचाने हैं।।२।।

विविध दुःख सुख वह सहें, विधिवत् यज्ञ भी करें।
अक्षरक्षः विधि यज्ञन् की, हिय धरी अनुष्ठान करें।।३।।

अनेक कष्ट क्लेश सहें, अन्त में क्षणिक सुख मिले।
उपलब्ध इतना ही होये, सुख बस इक पल मिले।।४।।

स्पष्ट श्रुति रे कहती है, चाहपूर्ण यह यज्ञ त्यजो।
परम सुख और शान्ति, इससों तो उपलब्ध न हो।।५।।

अनेक दुःख वह सहते हैं, और भटकते रहते हैं।
नित्य निरन्तर जान लो, जन्मते मरते रहते हैं।।६।।

ज्यों अन्धे का अन्धा ही, पथप्रदर्शक बन जाये।
अज्ञान रति अज्ञानी को, राह क्योंकर दिखलाये।।७।।

मुक्ति साधन यज्ञ नहीं, इससों उठना ही होगा।
चाह संग चाहक अहम्, अब तो त्यजना ही होगा।।८।।

वेद अवज्ञा नहीं करें, वेदन् से ही यज्ञन् कहें।
वेदन् के अन्त में, अज्ञान पूर्ण ही यज्ञ करें।।९।।

परम उपलब्धि ही जानो, वेदन् का रे सार है।
पूर्ण साधना का दिया, है वहाँ पे सार है।।१०।।

आरम्भ में यज्ञ दान किये, इनसों उठ आगे चल दे।
प्रथम कक्षा पाठ हुआ, जान लिया आगे चल दे।।११।।

गणना प्रथम से सीखे थे, याद ही करते रहते थे।
गणना परे अब हुये, अब नहीं कहें ज्यों कहते थे।।१२।।

प्रथम कक्षा में नित्य ही, अक्षर याद रे होते थे।
वर्णमाला कर में लिये, वर्णन् में ही खोते थे।।१३।।

पर इस पल देखो साधक रे, क्या पूछो वर्ण रे कौन है।
क्या पूछो क्या अर्थ है, यह शब्द रे कौन है।।१४।।

यह बतियाँ अब छोड़ दीं, स्वतः समझ आने लगी।
बिन भूले बिन याद किये, वर्ण पढ़ी पढ़ी जाने लगी।।१५।।

इसी विधि अरे साधना में, वेद मन्त्र पढ़ाये थे।
चाहना पूर्ति साधन रे, पूर्ण ही बताये थे।।१६।।

क्या अब लग नहीं जाग उठा, क्या न समझा यह भोग मिटे।
इच्छित फल तू पा भी ले, क्षणिक तेरा भोग मिटे।।१७।।

इक तन ही रे भोगेगा, शुभ कर्म का फल यह मिला।
प्रादुर्य संस्कारन् का, कभी तो मिट ही जायेगा।।१८।।

यथा इच्छित तू पा गया, मत भूलो क्षणिक पाया।
जो चाहा सम्मुख आया, अरे यह सब ही मिट जायेगा।।१९।।

वेदन् में जो मन्त्र कहे, इच्छापूर्ति ही हो सके।
अरे मूर्ख तू सब जान के, क्या इसमें अभी खो रहे।।२०।।

कुछ पल का यह संग है, चढ़ा अहम् का रंग है।
ज्ञानी निज को मान रहा, मान्यता यह तम रे है।।२१।।

सत् संकल्पी भी जो हुआ, सोच सोच फिर क्या रे मिला।
गर राम मिलन का उस पल भी, तूने न संकल्प किया।।२२।।

मूर्ख उसको कहते हैं, जो चाहित पा भरमा जाये।
अविद्या रमणी रहते हुए, ज्ञानवान कहला जाये।।२३।।

जग कहे महा पण्डित तू, तू माने तुझे ज्ञान हुआ।
इच्छित फल जो पा लिया, मूर्ख क्यों अभिमान हुआ।।२४।।

पूर्व जन्मन् के कर्मन् की, प्रतिकार झंकार यह है।
संग में देख रे श्रुति की, यह ही तो ललकार रे है।।२५।।

जाग ज़रा और देख यहाँ, अन्धेवत् तू जा रहा।
पग पग अरे देख ज़रा, तू तो ठोकर खा रहा।।२६।।

श्रुति ताड़ना देती है, राज़ यहाँ पर समझ ले।
जन्म मृत्यु आघात रे मन, बार बार तू क्यों सहे।।२७।।

यज्ञ याज्ञ अरे जान ले, तेरे कारण ही ये कहें।
अतृप्त तृप्त तू हो जाये, इस कारण रे ये कहें।।२८।।

वेदान्त रे यह नहीं, आरम्भिक वेद रे तूने पढ़े।
प्रथम कक्षा वेदन् की, में जाये करी उलझ गये।।२९।।

जो कुछ क़दम रे और बढ़े, वेदान्त तक जा पहुँचे।
मिथ्यात्व जग का जान करी, भ्रमान्त तक आ पहुँचे।।३०।।

जाने मायिक माया है, चाहना का खिलवाड़ है।
मानो भ्रम इसको कहलो, मिथ्या यह बहार है।।३१।।

परम बिना कुछ है ही नहीं, अन्य सभी रे भ्रम ही है।
सत्त्व तत्व पूर्ण जग में, जाने एक वह ब्रह्म ही है।।३२।।

जन्म मरण सों उठ गये, सत्त्व सार जो जान गये।
नयनहीन वत् वह वरते, जो नहीं पहचान रहे।।३३।।

उससों अन्धा को' होगा, जो देख के कुछ भी न देखे।
उससों बहरा को' होगा, श्रुति सुनी कुछ न सुने।।३४।।

स्पष्ट श्रुति भी देख कहें, अब भी सम्भल तुम जावो रे।
मिथ्या ज्ञान रे पा करी, नाहक न इतरावो रे।।३५।।

लक्ष्य तलक तूने जाना है, जग का भोग्य लक्ष्य नहीं।
परम तत्व तो है परे, चाह से हो प्रत्यक्ष नहीं।।३६।।

स्वर्ग जो तूने पा लिया, सुडौल तन तो पा लिया।
निश्चित यह मिट जायेगा, कहाँ पे मोह लगा लिया।।३७।।

वाँछित फल रे पा लिया, सुडौल तन तो पा लिया।
मन का जो खिलवाड़ है, संग वहीं रे बढ़ा लिया।।३८।।

भोग भोग कर सोच ज़रा, इक दिन उठना ही होगा।
बाह्य संग रे तेरा है, बाह्य त्यजना ही होगा।।३९।।

तैजस है तू जान ले, तन तद्रूपता छोड़ दे।
प्रज्ञा जागृत हो जाये, कारण से नाता जोड़ दे।।४०।।

बाह्य प्रज्ञता छोड़ के, आन्तर प्रज्ञ तू हो जाये।
परम मौन में मन तेरा, साधक रे अब खो जाये।।४१।।

भाव प्रवाह अभाव भया, परम मौन यह हो जाये।
मौन की ओर तू क़दम धरो, तो ही तो रे हो पाये।।४२।।

स्वर्ग तो तूने पाया है, यहाँ पे मत भरमाओ रे।
तेरा लक्ष्य रे ये ही है, यह समझ मत जाइयो रे।।४३।।

गर उलझे इस स्थिति में तुम, समझे सब कुछ पा लिया।
ज्ञानी निज को मान गये, जानो सब गँवा लिया।।४४।।

अब उठने का बेला है, क्षणभँगुर यह छोड़ दे।
तेरा नहीं यह नित्य नहीं, यहाँ से नाता तोड़ दे।।४५।।

वही परम को पा सके, आनन्द परे जो हो गये।
इच्छित भी है और पा भी सके, त्याज्य समझ उसे छोड़ दे।।४६।।

यही श्रुति में देख कहें, आगे बढ़ना ही होगा।
परम तत्व तो है परे, साधना करना ही होगा।।४७।।

राम तत्व को राम मिले, राम कृपा अब हो जाये।
स्वर्गपुरी जो है मिली, उसमें मन न खो जाये।।४८।।

राम नाम के आसरे, मन बढ़ते तुम जाना रे।
नित्य निरन्तर परम की, महिमा ही तुम गाना रे।।४९।।

३०-८-६१

❖ ❖ ❖

Form IV (See Rule 8)

1. Place of Publication: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
2. Periodicity of Publication: Quarterly
3. Printer's name: Mr. Ajay Mittal Nationality: Indian
   Address: Sona Printers Pvt. Ltd., F-86/1 Okhla Industrial Area, Phase I, New Delhi 110020
4. Publisher's name: Mr. Harishwar Dayal Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
5. Editor's name: Ms. Poonam Malik Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Arpana Trust.

I, Harishwar Dayal, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Harishwar Dayal
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana

चहुँ ओर आपके प्यार की महक..

(श्रद्धांजलि)

अतीव प्रिय चाचा जी, हम आपको कभी भी भुला नहीं पायेंगे.. भूलेंगे भी तो कैसे.. क्योंकि आप तो हमेशा हमारे दिल में रहते हैं। आपके जैसी ख़ूबसूरत आत्मा के लिए और कोई उपयुक्त जगह हो भी क्या सकती है.?!!

दशकों तक हमने आपके मौन लेकिन गहन प्रेम का अनुभव किया है.. वही आपका गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत करना.. आपकी आँखें, जिनसे सदैव आशीर्वाद ही छलकते थे.. और प्रेमपूर्वक वही आपका प्रश्न.. "तुम मुझ से मिलने कब आ रहे हो?" वह महज़ एक प्रश्न ही नहीं हुआ करता था.. वह तो मानो प्रेम से ओत-प्रोत आपका निमंत्रण ही हुआ करता था..

हम आपके हँसमुख स्वभाव को हमेशा याद रखेंगे, और उसे दिल में सँजोये रहेंगे.. आपके वे चुटकुले, जो मानो सदैव आपके लबों पर तैयार ही रहा करते थे और शब्दों में बंधने से पहले ही वे आपकी आँखों की जगमगाहट से छलक जाया करते थे.. आपकी प्यारी सी मधुर मुस्कान गहराई से हमारे दिल में हमेशा अंकित रहेगी।

और सबसे महत्वपूर्ण, परम पूज्य माँ के समक्ष आपकी भक्तिपूर्ण विनम्र भेंट हुआ करती थी.. कोई भी वर्ष ऐसा नहीं बीता होगा, जब आपने उनके लिए विशेष रूप से तैयार करवाये गये भगवान जी के स्मृतिचिन्ह भेंट न किये हों.. जिन पर सदैव ये शब्द अंकित हुआ करते थे, 'प्रेमपूर्वक भेंट आपके बेटे रमेश महता की ओर से'। हो सकता है आपने उनके द्वारा बताया गये जीवन के ज्ञान को अक्षरशः न पढ़ा हो लेकिन आपके जीवन में उसे जीने के प्रयास स्पष्ट दीखते थे.. जो वास्तव में एक बेटा ही तो कर सकता है।

..और पिछले लगभग एक दशक से हम सब ने विस्मयपूर्वक आपको अपने शारीरिक कष्ट को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए देखा.. जिसके लिए हम आपको और आपकी जीवन-संगिनी पम्मी चाची जी को भी एक मज़बूत स्तम्भ की भाँति आपका साथ देने के लिए सलाम पेश करते हैं।

पम्मी चाची जी, आप दोनों को हमारा प्रेमपूर्वक प्रणाम.. आप जो हैं, और जो भी आप हम सब के लिए करते हैं, उसके लिए हमारी हार्दिक कृतज्ञता स्वीकार करें.. आपकी करुणा और आपका प्रेम आपके बच्चों के जीवन और दिलों से भी गुँजायमान होते हैं.. और हम व्यक्तिगत रूप से प्रिय मनु, कनु और बनु का सहयोग अर्पणा के सभी प्रयासों में अनुभव करते हैं। अर्पणा में हम सभी चाचा जी की आनन्ददायक यादों को सँजोते हुए हृदय की गहराइयों से आप सभी के प्रति कृतज्ञ हैं।

चिकित्सा में भी उनके अद्‌भुत कौशल को उनके प्रत्येक मरीज़ द्वारा याद रखा जायेगा, जिन्हें उन्होंने केवल दवा के माध्यम से ही नहीं बल्कि अपनी हास्यकला के माध्यम से भी भला-चंगा किया। हम सभी विनम्रतापूर्वक हर देन के प्रति कृतज्ञ हैं जिसे हमने आप से प्राप्त किया और आज भी कर रहे हैं।

हम प्रार्थना करते हैं कि आपके दिलों में शान्ति बनी रहे। चाचा जी के जीवन की सरलता के सौंदर्य का अनुकरण करते हुए, हमें यक़ीन है कि भगवान जी का आशीर्वाद आपके दिलों से बिछुड़ने के दर्द को मिटा देगा और आप चाचा जी की विरासत को आगे ले जाने में सफल होंगे, जिससे हम सब भी गर्वान्वित होंगे।

हमारा प्यार, सलाम और प्रणाम!

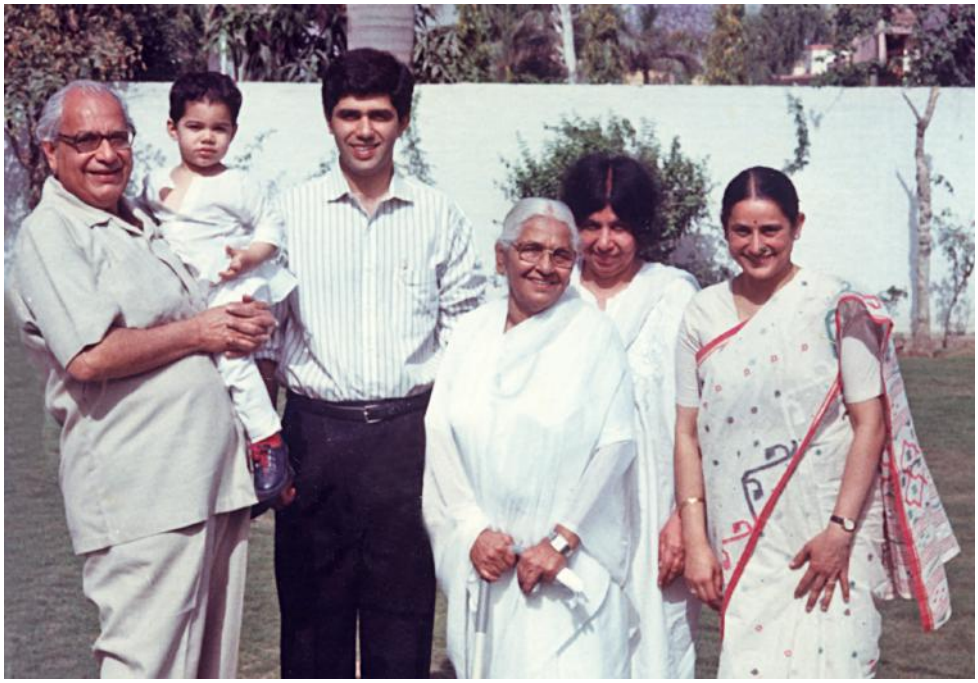

बुद्धि त्याग से अभिप्राय

अर्पणा प्रकाशन 'ज्ञान विज्ञान विवेक' में से

परम पूज्य माँ के पिता जी, श्री. सी. एल. आनन्द, बार-एट-लॉ थे, जो पंजाब विश्वविद्यालय में तीस वर्ष तक लॉ कॉलिज के अध्यक्ष रहे। वह महान शास्त्रज्ञ, विद्वान, उच्चविचारों वाले असाधारण मानसिक शक्ति सम्पन्न व्यक्ति थे। वह अपनी निजी आध्यात्मिक उन्नति व शास्त्र स्पष्टीकरण के लिये मन्दिर में आकर माँ से प्रश्न पूछते थे। (वह मन्दिर में अपनी ही बेटी को 'माँ' कह पुकारते थे।)

प्रश्नकर्ता के प्रश्न को पूज्य माँ भगवान के चरणों में ज्यों का त्यों धर देते थे और प्रसादवत् उत्तर पूज्य माँ के मुखारविन्द से बह जाता था। यही उनका दिव्य प्रज्ञा प्रवाह है।

पिता जी

कहते हैं कि साधक दैवी गुण प्राप्त करे और तन, मन तथा बुद्धि से उठ जाने के यत्न करे। यह दैवी गुण भगवान ने गीता में बताये हैं। तन, मन से उठ जाना भी थोड़ा समझ लिया.. परन्तु बुद्धि से उठ जाना अभी नहीं समझ सका।

यह कुछ और स्पष्ट कीजिये।

प्रश्न अर्पण

उपार्जित दैवी गुण करें, संत गण यही कहते हैं।
तन मन बुद्धि सों उठने के, यत्न करें वह कहते हैं।।१।।

दैवी गुण कहे श्याम ने, तन मन से उठना समझ लिया।
बुद्धि से उठना न समझे, स्पष्ट करी तू ही समझा।।२।।

तत्व ज्ञान

बुद्धि सों उठने को कहें, बुद्धि त्याग की बात नहीं।
मोहपूर्ण आवरण त्यजो, अज्ञान आवृत बुद्धि नहीं।।३।।

अप्रकाशजम रुचि चाकर, मान्यता बधित है यह।
भावना झूठ को सत्य कहे, इसको बुद्धि कौन कहे।।४।।

असत्य में सत् का भान करे, मिथ्यात्व को वास्तविकता कहे।
झूठ कही कही कर जो नित्य, दोष विमुक्त तुझे करे।।५।।

कल्पित में भरे आस्तिकता, कल्पना आधारित तर्क करे।
न्यायी निज को वह कहे, पर न्याय कबहुँ न करे।।६।।

तन अपनाये ब्रह्म का जो, मिथ्यात्व से मन भरा हुआ।
सत् जो कबहुँ न जान सके, कहे सत् मैंने जान लिया।।७।।

कर्तृत्व भाव भोक्तृत्व भाव, का समर्थन जो करे।
गुण बधित गुण न समझे, बुद्धि इसको कौन कहे।।८।।

जब कहें उठ जाओ तुम, कही कहें सत् जान लो।
अवास्तविकता सों उठ करी, वास्तविकता को जान लो।।९।।

अंधियारे को छोड़ करी, उजियारे ओर अब तुम बढ़ो।
प्रेय पथ त्यजी श्रेय ओर बढ़ो, उत्तरायण की ओर चलो।।१०।।

शुक्ल में स्थित हो जायेगा, विवेक जब हो जायेगा।
बुद्धि से उठी तुम कह लो, प्रज्ञा में स्थित हो जायेगा।।११।।

सत्य से प्रीत जो हो जाये, जीवन में उसको ही चाहे।
मेधावी तव बुद्धि भये, सत् जीवन में तब आये।।१२।।

वही भावना जो नित ही, असत् को सत् कर देती थी।
दोषयुक्त तेरी बुद्धि को, दोष विमुक्त कर देती थी।।१३।।

मेधावी वह बन जाये, सत् जीवन में वह ले आये।
सत् ही नित्य प्रतिष्ठित हो, गर मन में श्रद्धा हो जाये।।१४।।

गुण स्वतः आ जायेंगे, स्वतः ही वह बह जायेंगे।
महा प्रिय जब सत्य भये, जीवन में उन्हें पायेंगे।।१५।।

ज्ञान-विज्ञान सहित

यह दैवी गुण जो कहे, उपार्जित हम न कर सकें।
दैवी देन है जान मना, राम कृपा सों पा सकें।।१६।।

सत् सों गर तोरा संग हुआ, केवल सत् रह जायेगा।
सत् प्रीत परिणाम रूप, दैवी गुण स्वतः आयेगा।।१७।।

सत्संग का प्रसाद वह, अपने किये नहीं मिल सके।
ज्यों ज्यों सत्यता आ जाये, सत् राही ही मिल सके।।१८।।

आंतरिक संग हो सत् से, प्रसाद स्वतः ही पायेंगे।
प्रसाद लिये सुन राम मेरे, आप स्वयं ही आयेंगे।।१९।।

माँगन् की वहाँ बात नहीं, दामन फैलाव भी न चाही।
उस प्रसाद को पाने को, सीस झुकाव भी न चाही।।२०।।

जीवन में सत् अपनाओ, निज को जान ही तुम जाओ।
प्रतिष्ठित सत् में जब हुए, दैवी गुण तब ही पाओ।।२१।।

'मैं' अपने आपको जान ले, राहों में तन आये है।
'मैं' नहीं आप को जान सके, राहों में मन आये है।।२२।।

सत् नहीं पहचान सके, बुद्धि मान्यता विघ्न भये।
इस कारण वह कहते हैं, साधक उठी के आ जाये।।२३।।

जो है वह इस पल देख ले, जो नहीं उसकी मत कहो।
जो निज को तुम माने हो, इस पल तुम वह नाहीं हो।।२४।।

अपना आप ज्यों ज्यों जाने, जो न भाये उसे छोड़ोगे।
सत् से नाता गर जुड़ा, असत् से स्वतः ही तोड़ोगे।।२५।।

यह विधि कही है शास्त्रन् में, सत् विधि भी यह ही है।
राहों में अपने देखो, मन विधि बस यह ही है।।२६।।

बुद्धि त्याग यह नहीं कहें, कहें बुद्धि क्या है देख तो ले।
यह बुद्धि इक राह तेरी, इसे जगा के देख तो ले।।२७।।

बुद्धि जिसका नाम धरे, जिसे 'मैं' कहे यह बुद्धि है।
वास्तव में जग सों मिली, सत् सों यह बेसुध ही है।।२८।।

उस बुद्धि की क्या कीजे, जो अपना आप नहीं जान सके।।१०।।
अपना आप जो है ही है, उसको नहीं पहचान सके।।२९।।

आधुनिक 'मैं' को न जाने, कल्पित गुण आरोपित करे।
भूले से कोई सच कह दे, तव बुद्धि ही भड़क पड़े।।३०।।

इसको बुद्धि कौन कहे, विवेक यहाँ पे लाइये।
इसकी जा पर सतदर्शी, बुद्धि आंतर में लाइये।।३१।।

बुद्धि छुड़ाव की बात कहाँ, सत् की ओर इसे ले चलो।
सत् प्रिय भये बुद्धि को, सत् बुद्धि यह तब ही हो।।३२।।

विवेकी भये मेधावी भी, फिर प्रज्ञावान जब हो जाये।
छोड़ छाड़ की बात नहीं, ऋतम्भरा में यह खो जाये।।३३।।

वह तो परे की बात है, आधुनिक बुद्धि की बात नहीं।
अभी बुद्धि तीक्ष्ण करो, अभी त्याग की बात नहीं।।३४।।

सत् से अतीव प्रीत हुई, बुद्धि संग छूट ही जायेगा।
आधुनिक मान्यता का बंधन, स्वतः टूट ही जायेगा।।३५।।

गर सत्त्व साक्षी हो बुद्धि का, विवेक ओर बढ़ जायेगी।
हर निर्णय उस बुद्धि की, तोरे मन अनुकूल न होयेगी।।३६।।

अपने मन के प्रतिकूल तब, बुद्धि निर्णय दे देगी।
गर सत् सों संग हो गया, तव मन बदल भी यह देगी।।३७।।

वही बुद्धि बहु तीक्ष्ण हो, सूक्ष्म दृष्टि वहाँ उठी आये।
तन पाछे मन देख वह ले, आंतर ज्योति जल जाये।।३८।।

वह जाने मोरी बुद्धि ने, मन का ही नित साथ दिया।
असत्य वर्धन में जानो, मोरी बुद्धि ने हाथ दिया।।३९।।

सत् सों लग्न गर बढ़ती गई, वह बुद्धि बदल ही जायेगी।
छोड़ने की वहाँ बात नहीं, वहाँ पे सत्यता आयेगी।।४०।।

बुद्धि नहीं वहाँ सत्य बसे, हिय राम बस जायेंगे।
दैवी गुणपति राम आये, वा गुण स्वतः बह जायेंगे।।४१।।

राम आगमन के चिह्न जान, दैवी गुण स्वतः ही बहें।
'मैं' चाहे यह गुण न मिलें, राम आये स्वतः बह जायें।।४२।।

यह जान करी बस राम को, सामने धरी के राम कहो।
स्थूल में राम का दर्शन हो, तन से पल में उठ जाओ।।४३।।

तन तजो यह नहीं कहें, यह तन भूल ही जायेगा।
गर तन तूने छोड़ दिया, तन से उठ नहीं पायेगा।।४४।।

इसी विधि मन का जो, संग बुद्धि से हो जाये।
मन बुद्धि तद्रूप हुआ, कह लो मन से उठ जाये।।४५।।

जब बुद्धि का राज्य भये, मन तब राह में न आये।
किसी ने मन छोड़ा नहीं, मन से मन ही उठ जाये।।४६।।

इसी विधि गर सत्त्व रहे, बुद्धि चरण में अर्पित हो।
जो राम कहे तू वही करे, बुद्धि स्वतः समर्पित हो।।४७।।

तो बुद्धि कहाँ रह पायेगी, वा याद ही किसको आयेगी।
क्यों न कहें गीता ही यह, बुद्धि तोरी बन जायेगी।।४८।।

यह विधि है जान ले, त्याग कही कर इतना कहें।
इसे छोड़ दो नहीं कहें, वहाँ जोड़ दो बस यही कहें।।४९।।

तनोत्याग की बात नहीं, यहाँ मनोत्याग की बात नहीं।
बुद्धि त्याग की कौन कहे, यहाँ किसी त्याग की बात नहीं।।५०।।

यहाँ संग की बातें कहते हैं, जो तू है उसे जान ले।
जो तू निज को माने है, वह नहीं है तू यह जान ले।।५१।।

जो तू माने है निज को, वह ही अब तुम हो जाओ।
पर साक्षी सत्य बनाये करी, वा सत्यता में खो जाओ।।५२।।

७.१.१९६७

'यह बुत तो तुम हो ही नहीं,
क्यों नाहक अपना समय नष्ट करते हो?'

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।।१८।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/१८

अब भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. हे भरत कुल के अर्जुन!
२. नित्य अविनाशी और अप्रमेय स्वरूप,
३. शरीर में रहने वाले जीवात्मा के,
४. ये सब शरीर नाशवान कहे गये हैं,
५. इसलिये तू युद्ध कर।

तत्व विस्तार :

भगवान ने आत्मा को अप्रमेय कहा। **अप्रमेय** का अर्थ है :

१. अज्ञेय, जो जाना न जा सके।
२. जो सीमित न हो सके।
३. जो अचिन्त्य तत्व हो।
४. जो अकथनीय तत्व हो।
५. जो प्रकट न किया जा सके।
६. जो अप्रतिम तत्व हो।
७. जो अज्ञात तथा अविदित तत्व हो।
८. जो प्रत्यक्ष प्रमाणित न किया जा सके।
९. जो बुद्धि का विषय न हो।

नन्हीं जान्! भगवान यहाँ अर्जुन को 'भारत' कह कर पुकारते हैं। तू भी तो भारत कुल की है। भारत देश के वासी भारत कुल के ही तो सदस्य हैं। यह सब कुछ तुझे उतना ही लागू होता है, जितना अर्जुन को।

सो ध्यान से सुन! भगवान कहते हैं, 'हे भरत कुल की सन्तान अर्जुन! शरीरों में जो जीवात्मा बसता है, वह जाना नहीं जा सकता। किन्तु हे अविनाशी! नाश तो केवल शरीर का होता है, जीवात्मा का नाश नहीं होता। इसलिये :

१. तू व्याकुल न हो।
२. तू उठ! और इस लोक तथा क्षोभ का त्याग कर दे।
३. कौन जीतेगा और कौन हारेगा, यह सोच कर तू न घबरा।
४. कौन मरेगा या कौन जीता रहेगा, यह सोच कर तू न घबरा।
५. आगे क्या होगा, क्या नहीं होगा, तू इसकी भी चिन्ता न कर।
६. कुल धर्म या जाति धर्म नष्ट हो जायेगा, तू इस पर भी ध्यान न दे।

कुल धर्म की स्थापना देवत्व के जीतने में है। असुरों का राज्य रहा, तो कुल धर्म अवश्य ही नष्ट हो जायेगा। तब तो जाति धर्म नष्ट हो ही जायेगा। तुझे कुछ मिले न मिले, इसका भी ध्यान न कर। तुम्हारा कोई रहे न रहे, इसका भी ध्यान न कर।

हे अर्जुन!

१. तू अपना कर्तव्य करता जा।
२. तू जीवन के संग्राम से न घबरा।
३. तू जन्म-मरण की परवाह न कर।
४. तू सत् से भी संग छोड़ दे।
५. नाते-बन्धु, मित्रगण जो आततायियों से मिल गये हैं वह पाप-वर्धक हैं, तू इनसे युद्ध कर।
६. अधर्म से भिड़ाव ही धर्मात्मा का केवल मात्र धर्म है।

नन्हीं साधिका! देख, जो भगवान ने कहा, वही तुम्हारा भी धर्म है। तन रहे या न भी रहे, असुरत्व, अहंकार, दम्भ, दर्प, दुःखदायी, निर्दयी, तथा दुराचारी दुर्वृत्तियों से तो युद्ध करना ही होगा।

साधक तथा सिद्धगण लोक हित के लिये जीते हैं। साधक, सिद्ध तथा पण्डितगण जीवन या मृत्यु से नहीं डरते। ज्ञान का वास्तविक विज्ञान रूप यह ही है। सतप्रिय का स्वरूप इसी में निहित है।

क) वह ज्ञान, जो आपको कर्तव्य से दूर ले जाता है, अज्ञान है।
ख) वह ज्ञान, जो आपको सहज जीवन से दूर करवाता है, वह सत् ज्ञान नहीं।
ग) तुझे अपने तन से संग छोड़ना है।
घ) तुझे अपने मन से संग छोड़ना है।
ङ) तुझे अपनी मान्यताओं से संग छोड़ना है, कर्तव्य नहीं छोड़ने, इसका ध्यान रख।

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।।

श्रीमद्भगवद्गीता २/१९

आत्म तत्व के राज़ को भगवान अब और अधिक स्पष्ट करते हैं और कहते हैं:

शब्दार्थ :

हे अर्जुन!

१. जो इस (आत्मा को) मारने वाला मानता है,
२. और जो इसको मरा हुआ मानता है,
३. वे दोनों इस आत्मा को नहीं जानते,
४. न ही यह आत्मा मारता है और न ही यह मारा जाता है।

तत्व विस्तार :

भगवान कहते हैं, 'जो कहता है कि यह आत्मा किसी को मारता है वह झूठी बात कहता है।'

१. वह इस तन के गुण आत्मा पर आरोपित करता है।
२. वह कर्तापन का अहंकार रखता हुआ अपने सारे तनोकर्म आत्मा पर मढ़ता है।
३. वह जीव आत्मा को न जानते हुए ही ऐसा कहता है।
४. वह अपने आपको तन के तद्रूप करके, तन के कर्म अपना कर ऐसा कहता है।
५. वह तन या इन्द्रियों के भोगों को अपनाकर, उनके तद्रूप होकर अपने आपको भोक्ता माने हुए है। वास्तव में भोक्तृत्व भाव मिथ्या है।

बुद्धि भी आत्मा नहीं है! बुद्धि के निर्णय आत्मा के नहीं होते, इन्हें अपनाना भी तनोतद्रूपता के कारण होता है। सो गर जीव तन ही नहीं, यानि आत्मा है, तब गर तन ने किसी को मारा भी हो तो यह आत्मा ने नहीं मारा होता; और जो कहता है कि आत्मा मरा हुआ है, वह भी ग़लत कहता है क्योंकि :

१. अक्षर की क्षति नहीं होती।
२. अविनाशी का नाश नहीं होता।
३. अव्यय कभी घटता बढ़ता नहीं।
४. अखण्ड का कभी खण्डन नहीं होता।
५. मृतक शव को देख कर कहना कि आत्मा की मृत्यु हो गई है, यह भूल है।
६. देही ने देह छोड़ दिया तो देही की नहीं, बल्कि तन की मृत्यु हुई है।
७. आत्मा ने जो नाम और रूप धारण किये थे, उन्हें छोड़ दिया।
८. जड़ पंचभूतों द्वारा रचित तन पुनः पंच तत्वों में मिल गया।
९. आत्मा ने तो मानो उसमें वास करना छोड़ दिया है।
१०. तन के गुण ख़त्म हुए, तन का स्वभाव ख़त्म हुआ।
११. जिस पल तन की मृत्यु हो गई, तन के नाते-रिश्तों से मन का नाता ख़त्म हुआ। तनोकार्य कर्म सब ख़त्म हुए।

इसका अर्थ यह तो नहीं कि आत्मा ख़त्म हो गया। तन जन्मता है और तन ही मृत्यु को पाता है। आत्मा तो नित्य अविनाशी तत्व है। साधक सुन! तन की मृत्यु जिस पल हुई :

१. सत् धर्म अनुयायी के सत् की सुगन्ध ही बाक़ी रह गई।
२. उसके सुकृत और सुकीर्ति की सुगन्ध ही बाक़ी रह गई।
३. कर्तव्यपरायण, धर्मात्मागण का लोगों के हृदय में वास होता है। लोग इनको

याद करके इनके नक्शेक़दम पर चलना चाहते हैं, इनके जैसे बनना चाहते हैं, वह इनके नाम की महिमा गाते हैं और इनके गुणों को नित्य सराहते हैं।

इस विधि सत्‌गुण नित्य ही होते हैं। ये गुण, अनादि काल से श्रेष्ठ ही हैं। आज भी वह श्रेष्ठ ही हैं, कल भी श्रेष्ठ ही रहेंगे। किन्तु ये गुण भी तन के होते हैं, आत्मा के नहीं। आत्मा तो अकर्ता है, आत्मा तो अभोक्ता है। आत्म सत्ता से तन चेतनता पाते हैं और अपने अपने काज में प्रवृत्त हो जाते हैं। मैं, मन और बुद्धि तो नाहक ही कहते हैं, 'मैंने उसको मार दिया, वह देखो वह मारा गया।'

यह मिथ्या दम्भ है, यह मिथ्या अहंकार है, जड़ तन के साथ अज्ञानता के कारण तद्‌रूपता कर लेने से यह भ्रम हो जाता है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता २/२०

अब भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. यह आत्मा किसी काल में भी,
२. न जन्मता है, न मरता है
३. और न कभी होकर के फिर नहीं होता।
४. यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत तथा पुरातन है।
५. शरीर के मारे जाने पर यह मारा नहीं जाता।

तत्व विस्तार :

ध्यान से सुन नन्हीं! भगवान क्या कह रहे हैं! यह आत्मा न जन्मता है, न ही मरता है। यह तो निरन्तर एकरस ही रहता है। अजम से अर्थ जन्म रहित समझ लो।

नन्हीं! फिर से समझ :

१. आत्मा तो जन्म रहित है; गुण रहित है; विकार रहित है; आकार रहित है।
२. आत्मा का कोई नाम नहीं होता।
३. आत्मा का कोई रूप नहीं होता।

तनोअनित्यता :

तो फिर जन्म किसका होता है?

नन्हीं! जन्म तो तन का होता है। इसे प्रकृति अपनी त्रिगुणात्मिका शक्ति के आसरे रचती है।

१. जन्म माटी के बुत का होता है, जो कर्म बीज से उत्पन्न होता है।
२. बीज माटी में पड़ता है, माटी उसे पालती है और पुनः वह माटी में समा जाता है।
३. गुण भी माटी के बुत के होते हैं।
४. आकार भी पंचन्‌कृत तन का होता है।
५. इस बुत को नाम यह जहान देता है।
६. रूप भी इस पंचन्‌कृत बुत का ही तो होता है।
७. मृत्यु भी इस पंचन्‌कृत बुत की ही तो होती है।
८. जीवन भी इस पंचन्‌कृत बुत का ही होता है।
९. कार्य कर्म यह पंचन्‌कृत बुत ही करता है।
१०. गुण ही भोगते हैं अन्य वस्तुओं के गुणों को।
११. गुण ही मिटा देते हैं अन्य लोगों

के गुणों को।

१२.गुण ही प्रभावित होते हैं अन्य लोगों के गुणों से।

१३.इस बुत के सहज गुण ही कर्म में प्रवृत्त होते हैं।

१४.गुण ही विचलित होते हैं अन्य लोगों के गुणों या अपने ही गुणों से।

ये सब बातें तो मन की हैं। ये सब बातें तो जड़ तन की हैं। आत्मा तो इन सबसे बहुत परे है। आत्मा, जिसका जन्म ही नहीं हुआ, उसकी मृत्यु क्या होगी? आत्मा तो नित्य है, शाश्वत है; पुरातन है, नित्य एकरस है। यह अखण्ड तत्व अक्षर है।

देख नन्हीं! श्याम स्वयं कह रहे हैं कि तू तन नहीं है।

१. तुम तन पर मिथ्या ही इतराते हो।

२. तनोगुण के नाम पर इतना संग क्यों करते हो?

३. तनोगुण के नाम पर इतना गुमान अच्छा नहीं।

४. तन के कर्म अपना कर अपना कर्तृत्व भाव क्यों बढ़ाते हो?

५. विषयों का उपभोग तो तन करता है, तुम भोक्ता क्यों बन जाते हो?

६. इक माटी के बुत को स्थापित करने के लिये तुम क्रूर कर्म करते हो।

अजी! यह बुत तो तुम हो ही नहीं, क्यों नाहक अपना समय नष्ट करते हो? जिस तन पर इतना नाज़ है तुमको, यह तो मृत्यु-धर्मा है। तुम नित्य अक्षर तत्व हो।

७. तुम्हारा और इस तन का साथ कहाँ?

८. भई! यह तन और तुम, जो आत्म स्वरूप हो, दोनों विजातीय हो और जड़ चेतन का मेल कैसे हो सकता है?

क) इस कारण इस नाम-रूप से अपना झूठा संग छोड़ दो।

ख) इस तन पर जो इतराते हो, वह इतराना छोड़ दो।

ग) दम्भ, दर्प, अभिमान गुमान सब असत् हैं, इन्हें छोड़ दो।

घ) लोभ, तृष्णा इस तन के नाते ही तो करते हो, इनसे नाता तोड़ दो।

ङ) आशा, चाहना जो इस तन के नाते करते हो, इसे छोड़ दो।

च) शोक, भय, क्षोभ भी जो अपने को तन मान कर करते हो, उसे छोड़ दो।

यानि, जब तुम तन ही नहीं, तब तुम तन के लिये जो कुछ भी करते हो, वह असत् है, क्योंकि वह एक बुनियादी असत् पर आधारित है। जो तुम दूसरों के लिये करते हो, यही सत् है, क्योंकि इसकी बुनियाद तनत्व भाव पर आधारित नहीं।

संन्यासीगण, पण्डितगण, ज्ञानवान लोग तन को मृत्यु-धर्मा जानकर उससे संग नहीं करते।

१. वे आत्मा को अजम जानकर तन को कभी नहीं अपनाते।

२. वे अपने आपको आत्मा मान कर कर्तृत्व भाव से उठ जाते हैं।

३. वे अपने आपको आत्मा मान कर भोक्तृत्व भाव से उठ जाते हैं।

४. फिर वे स्वतः अपने तन के हित के लिये नहीं जीते।

५. फिर वे स्वतः ही लोगों के हित के लिये जीते हैं।

६. क्योंकि उनको मानो अपने मन की विस्मृति होती है।

७. उनका हर कर्म श्रेयस्कर ही होता है।

८. उनका हर कर्म सबके लिये कल्याणकारक ही होता है।

९. वे नित्य निर्भय स्वरूप अखण्ड संन्यासी ही होते हैं।

सो नन्हीं! तू भी भगवान की बात मान ले। स्वयं भगवान ही तो बता रहे हैं।

❖ ❖ ❖

"..अहंकार से उठाकर के,
मुझे परम चरण में धर देना!"

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य, परम वन्दनीय श्री हरि माँ प्रभु जी, हम सभी आपके बच्चे आपके पास विनीत प्रार्थना लेकर आये हैं.. स्वीकार कर लीजियेगा!

हे श्री हरि माँ प्रभु जी, अब चाहने या न चाहने की कोई बात ही नहीं रही.. आप ने धरा पर अवतरित होई निज सर्वस्व ही तो दे दिया! अपने समेत अपना सर्वस्व दे हमें निज प्यार से नवाज़ दिया। रोम रोम में व्याप्त होई करी आपने निज में हमें रमा लिया। चहुँ ओर से समेट करी निज चरणन् में लगा लिया!

यही तो सगुणवेष की महिमा है, सद्गुणों का हम सभी में विस्तार किया। एक क़दम भी ऐसा आप नहीं चले, जिसने आपकी यथार्थता व आपकी सत्यता का प्रमाण नहीं दिया.. तभी जान पाये हम सभी, आप ही हमारे पथ-प्रदर्शक हैं व आप ही हैं हमारे सद्गुरु, सच्चे सद्गुरु! आंतर में हमें धकेल करी हमारे सत्य का हमें परिचय दिया..

..कौन हूँ मैं,

..कैसा हूँ मैं,

..कैसे इस 'मैं' के चक्रव्यूह में फँसते गए, यह भी आपने बता दिया,

..विस्तार इस 'मैं' का कैसे हुआ, इसका राज़ बता दिया।

आपने हमें रुकने नहीं दिया.. यह सोचने के लिए, 'हाय, मैं कैसी हूँ? क्यों हूँ?' इन अँधेरों को दिखा आप सत् की अद्भुत व विलक्षण अनुभूति का साथ ही साथ दर्शन भी करवाते चले गये! इसी सत् की रोशनी ने अँधेरों में सत् का चिराग जला दिया। 'मैं', मम, मेरे मोह व राग-द्वेष का दर्शन करा दिया। अहंकार की चोटी पर बैठ करी जो नित नव अपराध करते थे.. उनपे रफ़्ता-रफ़्ता आप ही ने विराम लगा दिया।

आपके सत् की रोशनी ने इस क़दर लुभाना शुरु किया हमें कि अपने आप से मुलाकात करने के बाद उस तरफ लौटने का अवसर ही हमें कहाँ दिया.. 'मैं' को किसी भी शै व जीव पर दोष मढ़ने ही कहाँ दिया। हमने तो अपनी ही 'मैं' की वृत्तियों व स्वार्थभाव का जाल बुनी बुनी स्वयं को ही फँसा लिया.. नित नव अपराध करते हुये भी निज को निर्दोष बना लिया..

धन्य हैं आप, हे श्री हरि परम पूज्य माँ, जिन्होंने हमें हमारा जीवन दर्शन कराये करी हमें हमीं से बचा लिया.. हे करुणामयी माँ, कृतज्ञ हैं आपके, जिन्होंने हमें सत्पथ पर ला खड़ा किया जहाँ रोशनाई ही रोशनाई के सुन्दर व अतीव विशिष्ट कणों ने हमें लुभा लिया! आप ही से प्रेरित होई अपने आप से विमुख होने का परम सौभाग्य पा लिया।

बाह्यप्रज्ञ जो बुद्धि थी, उसने कभी हमें हमारे दोष व निज के भले-बुरे ज्ञान को जानने ही नहीं दिया। आप ही ने जब हमारा हमीं से परिचय करवाया, तभी हम जान पाये, 'हम क्या थे व कहाँ से कहाँ आ गये हम!' अपने आंतर से.. अपने ही कलिकाल से मुलाकात, हमारे अपने अँधेरों में उजालों की भव्यता का दर्शन कराई हमें धन्य धन्य होने का परम सौभाग्य हे माँ, आप ही ने हृदय-आँचल में भर दिया।

अतीव विनीत व कृतज्ञ भाव से धन्यवाद आपका करते हुये, आप ही के असीम अनुग्रह का प्रसाद पा लिया.. वह भी इतना भव्य और सुन्दर जिसे पा हम सदा-सदा के लिए धन्य धन्य होने लगे। आपके दिव्य प्रसाद के कण कण आन्तर में फूटने लगे, जिससे आप परम पूज्य श्री हरि माँ के दिव्य दर्शन निरन्तर लुभाने लगे।

शब से सहर तक आप ही की सत्यता की गुँजार रोम रोम में व्याप्त होने लगी। आपके श्री चरणन् में सीस भी व स्वयं का अंग अंग भी आपके शरणापन्न होई सदा के लिये झुक गया व मन आप ही के गुण गाने लगा..

..हमारे लिए चलते हुये आप ही आपके चरण दीखने लगे,

..आप न ही कभी स्वयं ठहरे,

..न ही हमें ठहरने दिया!

इसी लिए आंतर-बाहर आप ही आपकी ज्योत्सना से भरने लगा! साथ ही साथ यह भी आभास होने लगा, सद्गुरु और भगवान में कोई भेद नहीं! राम जी और आप जगद्जननी माँ में कोई भेद नहीं!

अभेद का भेद, सच जो आप श्री हरि से हमने पाया, आपके इस सगुण अवतार से युगों तक इस जगती पर गाया जाता रहेगा। कैसे शुक्रिया करूँ आपका.?!!

आप हमारे आंतर में मुहब्बत बनी व हमसफ़र बनी, हमारे काँटे बीनते ही चले गये और मौन हो कर भी बीनते ही चले जा रहे हैं। हम व पूर्ण जगती आपकी सदा आभारी रहेगी। तहेदिल से दुआ करती हूँ कि जन जन में आप यूँ ही व्याप्त हो जायें - आमीन

जिस तरह से आपने हमें हाथ पकड़ कर चलाया है.. सारी जगती यूँ ही आपके संग इतने ही प्यार में चलती चले.. यही हृदय से प्रार्थना है माँ मेरी आप से! जान गये हैं, यूँ यह परम सौभाग्य कहाँ मिलता है.. हे श्री हरि माँ, आप ही आपसे हम नवाज़े गये हैं। अब तो यही अनुनय-विनय है हमारी!

आपने जिस विध हमारे बीच से अपने-पराये का भाव मिटाया है.. अतीव प्रेम से हम मिल कर यूँ ही चलते चलें.. यही असीस भरा हाथ हमारे सर पर रखे रहियेगा! सम्पूर्ण जगती आप ही के शरणापन्न हो कर आप ही की होने का परम सौभाग्य पा जाये व हम सभी के जीवन सार्थक हो जायें.. हे जगतमयी, आपके प्रति हम समर्पित रहें!

आपसे ही पाये अनुपम ज्ञान-विज्ञान से ओत-प्रोत हुये हम जान गये कि आप ही हे श्री हरि माँ परम सत्य हैं! आप ही मुहब्बत हैं!

आप ही इबादत के क़ाबिल हैं, इसी परम सत्य को सीस निवाते हुये व असीम श्रद्धा-भक्ति से चल पायें! ईश्वर करे, आप ही से पाये अनन्त प्यार व रहगुज़र पर सीस नवाते हुये निरन्तर आपसे पाये क़दमों के निशां पर असीम श्रद्धा व भक्ति से चलते ही चलें! यही असीस भरा हाथ हमारे सीस पर धरे रखियेगा। आप ही आप के पदचिन्हों पर चलते चलें जो 'मैं' का नामो निशां ही न रहे।

आप, आप बस आप ही रहें.. तभी तो जान और मान पायेंगे, हमने अपने प्रभु के असीम अनुग्रह से यह जीवन का दिव्य प्रसाद सच ही ग्रहण कर लिया है जिसके हम क़ाबिल नहीं थे! आप ही की करुण-कृपा से इस अनहोनी (से भासित) को अपने जीवनों में पाकर धन्य धन्य हो गये हैं - हे श्री हरि नाथ आप से सनाथ हो गये।

आपसे यह जीवन पूँजी पा कर ही आप ग़रीबनवाज़ ने हमें नवाज़ कर कृतार्थ कर दिया है। आपके ही साक्षित्व में रहते हुये हम आप ही में रह पायें। आप से मिले इस सत् पथ पर आप ही की कृपा से चल पायें.. इसी मंगलयाचना को आप प्रभु माँ स्वीकार कर लीजियेगा! सदा-सदा आप ही से सनाथ हुये रहें!

हरि ओऽम् तत्सत परब्रह्म परमेश्वर तू। तू ही तू, इक तू ही तू, तू ही तू, बस तू ही तू। इस 'मैं' को अब मिटा दीजिये जो आप आप बस आप ही रह जायें या कहूँ आप ही आप में समा जायें।

'उर्वशी' में भी ऐसा ही भाव सुनने को मिला -

'चित्त न उठे अब मेरा प्रभु जी, बस ऐसा कुछ तू कर देना।
तुझ को पाना है प्रभु मैंने, उस ओर मन कर देना।।

अहंकार से उठाकर के, मुझे परम चरण में धर देना।
तुझ में ही अब मैं लीन रहूँ, कुछ ऐसा प्रभु तुम कर देना।।

नव साधक तेरे दर आई, मुझे राम चरण में धर लेना।
तव मिलन को हर पल तड़पूँ मैं, राम कुछ ऐसा कर देना।।

मेरे नयनन् में हे राम मेरे, अपनी मूर्त तू भर देना।
जित देखूँ उत तू दर्शाये, मतवाली ऐसी कर देना।।

प्रेम अग्न गर बुझने लगे, तुम नाम के घृत सों भर देना।
जल जल जब पावन हो जाऊँ, आन के चरण में धर लेना।।'❖

परम पूज्य मा

अर्पणा

समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च २०१९

अर्पणा आश्रम

संगीत के माध्यम से 'उर्वशी' ने दिलों को छुआ

२ जनवरी २०१९ और ६ फरवरी २०१९ को २ 'उर्वशी भजन संध्या' श्रीमती गायत्री सचदेवा एवं श्रीमती अलका सिंह के निवास स्थान मॉडल टाउन, करनाल पर आयोजित की गईं। मित्र एवं परिवार के सदस्य परम पूज्य माँ के भक्तिपूर्ण ज्ञान के शब्दों को गाने के लिए एकत्रित हुए। परम पूज्य माँ के सतमय ज्ञान ने कई लोगों को प्रेय पथ की ओर अग्रसर किया।

अर्पणा की विश्व को एक झलक

५ से १३ जनवरी २०१९ को, नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित 'विश्व पुस्तक मेले' में अर्पणा ट्रस्ट ने भाग लिया जिससे 'उर्वशी' को जन-जन तक पहुँचाया जा सके। विभिन्न क्षेत्रों, आस्था एवं विभिन्न आयु के लोग स्टॉल पर आये, जहाँ उन्होंने अर्पणा के प्रेरणा स्रोत परम पूज्य माँ की आध्यात्मिक यात्रा के विषय में सुना। कुछ लोगों ने पुस्तकें ख़रीदीं, जबकि कुछ ने अर्पणा द्वारा चलाई गई विभिन्न सेवाओं में योगदान देने की पेशकश की। पूज्य माँ के शब्दों को पुस्तकों, सी डी, चित्रों एवं अन्य माध्यमों द्वारा सब के साथ साँझा कर पाना हमारा परम सौभाग्य है।

घरेलू हिंसा के ख़िलाफ़ ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना

कानून सम्बन्धी कार्यशाला

श्री कमलदीप दयाल, सुप्रीमकोर्ट एवं हाईकोर्ट के एडवोकेट, के नेतृत्व में २३ दिसम्बर २०१८ को ५९ महिला नेताओं एवं सामाजिक न्याय के लिए बनी पंचायत की छाया समिति से स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने एक कार्यशाला में भाग लिया। उन्होंने महिलाओं द्वारा उठाए गये मामलों को सम्बोधित किया एवं उत्पीड़ित महिलाओं की सुरक्षा और रखरखाव के लिए बने कानून के प्रावधानों को समझाया।

मैजिस्ट्रेट और ज़िला संरक्षण अधिकारी की भूमिकाओं के विषय में बताया गया, और साथ ही साथ निःशुल्क कानूनी सैल और अन्य सरकारी एजेंसियाँ जो पीड़ितों के लिए आश्रय प्रदान करते हैं, के विषय में भी बताया गया। शिकायतें डीपीओ या कानून के अन्तर्गत सेवा प्रदाता के रूप में पंजीकृत एनजीओ द्वारा मैजिस्ट्रेट से की जा सकती हैं।

५० स्वयं सहायता समूह की महिला नेताओं के लिए सरकारी कार्यालयों के दौरे की व्यवस्था की गई जहाँ घरेलू हिंसा के पीड़ितों को राहत दी जाती है।

हरियाणा में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में सहयोग देने के लिए टाइड्ज़ फाउंडेशन एवं IDRF, यूएसए को हमारी गहरी कृतज्ञता

अर्पणा अस्पताल

नवजात शिशुओं की देखभाल

अर्पणा अस्पताल में २०१८ में नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए ३ गहन प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये गये, जहाँ अर्पणा द्वारा पंचायत की उपसमितियों के सदस्यों एवं समुदाय के संचालकों को प्रशिक्षित किया गया।

इनके द्वारा माताओं और परिवार के सदस्यों की अच्छी स्वास्थ्य प्रथाओं के विषय में जागरूकता उत्पन्न की गई, जिससे नवजात शिशुओं में मृत्यु दर को कम किया जा सकता है।

डॉ तनु गोयल नवजात शिशुओं की विशेष एम्बुलेंस में उपकरण प्रदर्शित करती हुईं

कार्यशालाएँ एवं प्रशिक्षण शिविर

अर्पणा के प्रशिक्षकों एवं स्वयं सहायता समूह की महिला नेताओं द्वारा ८० गाँव में लगभग १०,००० महिलाओं को स्वास्थ्य शिविरों द्वारा जानकारी दी गई।

अर्पणा नवजात शिशुओं की देखभाल हेतु धन जुटाने के लिए अर्पणा कनाडा का अत्यन्त आभारी है

दिल्ली से समाचार

मोलरबंद

प्रेरणादायक नाटिकाओं के साथ गणतंत्र दिवस का समारोह

तीसरी कक्षा के छात्रों ने शहीद भगत सिंह के जीवन पर एक स्वाँग प्रस्तुत किया। वह एक निडर एवं वीर भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने अपना जीवन देश को आज़ाद कराने के लिए बलिदान कर दिया। इस प्रेरणादायी स्वाँग के द्वारा इनकी बहादुरी और इनकी वीरता को चित्रित किया गया।

पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के जीवन पर भी ६-८वीं कक्षाओं के छात्रों द्वारा नाटक प्रस्तुत किया गया। डॉ. कलाम बहुत ग़रीब परिवार से थे - शायद उन छात्रों से भी ग़रीब थे, परन्तु कड़ी मेहनत और अध्ययन द्वारा वह एक प्रख्यात वैज्ञानिक बन सके। वह भारत के मिसाइल कार्यक्रम के संस्थापक भी थे।

उन्हें 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया' के रूप में जाना जाता है और आगे चल कर वह भारत के राष्ट्रपति बने।

वर्ष २००२ में आरम्भ किए गए अर्पणा के मोलरबन्द शैक्षिक केन्द्र की संस्थापक श्रीमती उषा सेठ ने इनकी पुस्तक 'इग्नाइटेड माइंड्स' से ही प्रेरणा पाई।

अवीवा इंडिया, सीएचआरओ श्री अमृत मलिक को अवीवा लिविंग लेजेंड आवॉर्ड से नवाज़ा गया और उन्होंने पुरस्कार निधि को उदारतापूर्वक अर्पणा के शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए दे दिया।

अर्पणा, अवीवा पीएलसी यू के, एस्सेल फांउडेशन नई दिल्ली, टैक्निप इंडिया, केयरिंग हैण्ड फॉर चिल्ड्रन, यू के. अर्पणा कनाडा का शैक्षिक क्रार्यक्रमों में योगदान देने के लिए अत्यन्त आभारी है।

वसंत विहार

थिएटर वर्कशॉप

एक नई सांस्कृतिक पहल के अन्तर्गत श्री सुखांगशु चैटर्ज़ी, एक प्रसिद्ध थिएटर कलाकार और निर्देशक के मार्गदर्शन में एक थिएटर कार्यशाला आरम्भ की गई।

३० दिसम्बर को ६-८वीं कक्षाओं के छात्रों द्वारा एक अद्भुत नाटक का प्रदर्शन किया गया जिसका शीर्षक 'ट्रेज़र आइलैंड' (Treasure Island) था। यह मित्रता एवं टीमवर्क के मूल्यों पर आधारित था।

हिमाचल की गतिविधियाँ

कृषि अधिकारियों के साथ प्रशिक्षण शिविर

१५ एवं १६ दिसम्बर २०१८ को अर्पणा के गजनोई और बढ़िया कोठी के किसान उत्पादक सहकारी सोसायटियों के महिला एवं पुरुष किसानों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए गए। कृषि अधिकारियों ने किसानों को अच्छे प्रकार की फसलों को उगाने के लिए एवं पानी की टैंकियों पर सब्सिडी की योजनाओं के बारे में बताया।

ग्रामीण हाट का विशेष दौरा

डॉ. हरीश शर्मा, ग्रामीण हाट के चेयरमैन, ने १६/१२/२०१८ को अर्पणा की महिलाओं द्वारा निर्मित हस्तशिल्प वस्तुओं को देखकर, उन्हें बेहतर क़ीमत पाने के लिए एक सरकारी विपणन केन्द्र, ग्रामीण हाट, में बेचने की सलाह दी।

अर्पणा ने १७ दिसम्बर को गजनोई किसान उत्पादक सहकारी सोसायटी से किसान नेताओं के लिए ग्रामीण हाट तड़ोली के दौरे की व्यवस्था की। वहाँ उन्होंने ख़रीदारी, पैकिंग और लेबलिंग के बारे में सीखा और पैसों का हस्तांतरण सीधे बैंक खातों में कैसे किया जाता है इसके विषय में भी जानकारी प्राप्त की।

हिमाचल में विकास कार्यक्रमों में समर्थन देने के लिए अर्पणा द्वारा टाइड्ज़ फाउंडेशन यूएसए का हार्दिक धन्यवाद

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002
Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:

Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Send contributions in USA to:

Mr. Vinod Prakash, President, IDRF, 5821 Mossrock Drive, North Bethesda, MD 20852
Mr. Jagjit Singh, AID for Indian Development, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249
Send contributions to Arpana Canada:

c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada
Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Information & Resources Office: 91-184-2390905 **Executive Director:** 91-9818600644
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Contact person: Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9991687310
Websites: **www.arpana.org** **www.arpanaservices.org**

Arpana Ashram

Research

Publications & CDs

Arpana endeavours to share its treasure of inspiration – the life, words and precept of *Pujya Ma*, through the publication of books and cassettes.

Publications

श्रीमद्भगवद्गीता	
भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन	Rs.300
कठोपनिषद् (हिन्दी)	Rs.120
श्वेताश्वतरोपनिषद्	Rs.400
केनोपनिषद्	Rs.36
माण्डूक्योपनिषद्	Rs.25
ईशावास्योपनिषद्	Rs.20
प्रश्नोपनिषद्	Rs.50
गंगा श्रद्धा प्राणप्रद	Rs.40
प्रज्ञा प्रतिभा	Rs.30
ज्ञान विज्ञान विवेक	Rs.60
मृत्यु से अमृत की ओर	Rs.36
जपु जी साहिब	Rs.70
अर्पणा भजनावली	Rs.80
वैदिक विवाह	Rs.24
गायत्री महामन्त्र	Rs.20
नाम	Rs.15
अमृत कण	Rs.12

Lets Play the Game of Love	Rs. 400
Bhagavad Gita	Rs.450
Kathopanishad	Rs.120
Ish Upanishad	Rs.70
Prayer	Rs.25
Love	Rs.20
Words of the Spirit	Rs.12
Notes	Rs.10

Bhajan CDs

ईशावास्योपनिषद् (a deluxe 8 CD set)	Rs.2000
स्वरांजलि - भाग १ और २	Rs.175each
नमो नमो	Rs.175
उर्वशी भजन	Rs.175
हे राम तुझे मैं कहती हूँ	Rs.75
गंगा (भाग १ और २)	Rs.75each
राम आवाहन	Rs.75
तुमसे प्रीत लगी हे श्याम	Rs.75
हे श्याम तूने वंसी वजा	Rs.75

For ordering of books, please address M.O./DD to: **Arpana Publications** (payable at Karnal). Kindly add Rs. 25 to books priced below Rs. 100 & Rs. 40 to books above Rs. 100 as postal charges

Arpana Pushpanjali

Hindi/English Quarterly Magazine

Subscription	**Annual**	**3yrs**	**5yrs**
India	130	375	600
Abroad	350	1000	1650

Advertisement	**Single**	**Four**
Special Insertion (Art Paper)	10,000	
Colour Page	3500	12,000
Full Page (b&w)	2000	6000
Half Page (b&w)	1200	4000

(Amounts are in Rupees)

Subscription drafts to be addressed to: **Arpana Trust (Pushpanjali & Publications)**

Delhi Contact Person:
Mrs. Neeta Tandon
E-22 Defence Colony,
New Delhi 110024
Tel: 98712-84847

Donation cheques to be addressed to: Arpana Trust

Arpana Trust *- Donations for Spiritual Guidance Activities, Publications, Scholarships and Delhi Slum Project. Regd. under FCRA (Regd, number 172310001) to receive overseas donations.*

Applied Research

Medical Services

In Haryana
- 130 bedded rural Hospital
- Maternity & Child Care
- Family Planning
- Eye Screening Camps
- Specialist Clinics
- Continuing Medical Education

In Himachal
- Medical & Diagnostic Centre
- Integrated Medical & Socio-Economic Centre

In Delhi Slums
- Health care to 50,000
- Immunisations
- Antenatal Care
- Ambulance

Women's Empowerment

Capacity Building
- Entrepreneurial activities
- Local Governance
- Micro-Planning
- Legal literacy

Self Help Groups
- Savings
- Micro credit
- Federation
- Community Health
- Exposure Visits

Gender Sensitization

Income Generation through Handicraft Training Skills

Child Enhancement

Education
- Children's Education
- Vocational Education
- Cultural Opportunities
- Day Care Centres
- Pre-school Care & Education

Health
- Nutrition Programme
- School Health Programme

In Delhi Slums
- Environment, Building Parks & Planting trees
- Housing Project
- Waste Management

Arpana Research and Charities Trust *Exempt U/S 80 G (50% deduction) on donations for the hospital & Rural Health Programmes. Regd. under FCRA (Regd. number 172310002) to receive overseas donations.*

Contact for Questions, Suggestions and Donations:

Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Arpana Group of Trusts, Madhuban, Karnal - 132037, Haryana.
Tel: (0184) 2380801- 802, 2380980 Fax: 2380810 Email: at@arpana.org / Web site: www.arpana.org

All donation cheques/ DD to be addressed to : ARPANA TRUST